॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे परमदेव! तू कल्याण करने वाला है। तू हमारा ही नहीं संसार का कल्याण करने वाला है। आज संसार में प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या के हृदय में उस उज्ज्वलता को दे जो आपने सृष्टि के प्रारम्भ में प्रत्येक वेद मन्त्र द्वारा हमें प्रेरणा दी है। उस प्रेरणा को पुनः से जागृत कर। विधाता! आपने सृष्टि का निर्माण किया और सर्वप्रथम मानव के लिए ज्ञान का स्रोत दिया, उस आनन्द के स्रोत को आज भी दे। किसको दे? महान् पात्रों को दे। आज हमारे हृदय को पवित्र बना, जिससे हम संसार में उज्ज्वल बनें। विधाता! जब आपकी कृपा होगी तो हम आपकी दया के पात्र बनेंगे। हे भगवन्! तू दया कर और इतनी दया कर कि हमारी आत्मा के द्वारा कोई दोष न आए। विधाता! जब हमारी आत्मा के द्वारा नाना प्रकार के दोष आ जाएँगे, तो हमारा जीवन, जीवन न रहेगा। प्रभु! दया कर।

हे प्रभु! हम कैसे अभागे हैं संसार में। मैं तो भगवन्! वह कर्म करना चाहता हूँ जिस कर्म को करके प्रभु! मैं तुम्हारी गोद में आ जाऊँ। भगवन्! मैंने आज से पूर्व काल में जो पाप किया है उसे क्षमा करो। आज मैं क्षमा चाहता हूँ। प्रभु! तू आज मुझे अपना और अपनाकर अपनी गोद में ले।

हे भगवन्! तू यज्ञ को देने वाला है, प्रेरणा देने वाला है, भगवन्! वह प्रेरणा दो, जिससे हम अपना और इस संसार का कल्याण कर सकें। जब विधाता की दया होती है तो हमारी आन्तरिक भावना उज्ज्वल और पवित्र हो जाती हैं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 571 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 646
वर्ष : 48 44 समग्र वर्ष : 55

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. सुक्रत	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-16
4. महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का तप	पूज्यपाद-गुरुदेव	17-34
6. ऋषियों के उद्‌गार		35
7. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		36-42

विशेष सूचना

कोरोना महामारी के कारण अप्रैल 2020 से जुलाई 2020 तक यौगिक प्रवचन (मासिक पत्रिका) का प्रकाशन व प्रेषित करने का कार्य सम्भव नहीं हो सका। इसके लिए अत्यन्त खेद है। माह अगस्त 2020 के लिए यौगिक प्रवचन को समिति की वेबसाइट द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है और सितम्बर 2020 से समिति पूर्व की भाँति सभी सदस्यों को प्रत्येक माह मासिक पत्रिका निश्चित दिनाँक 10/11 को निरन्तर प्रेषित करेगी।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

सुक्रत

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर पद्धति का वर्णन होता रहता है जिस पद्धति में उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का वर्णन आता रहता है। **ज्ञान और विज्ञान की जो अनुपम प्रतिभा है वह मानव को अनुपम बना देती है** क्योंकि अनुपमता उसमें मौलिक व्यक्तित्त्व रहने वाला है। जब हम यह विचार-विनिमय करते हैं कि हमारा जो हृदय है उसका जब तक तारतम्य कर नहीं लेते, समन्वय नहीं हो पाता बेटा! जब तक हमारे जीवन का उत्थान भी नहीं हो पाता। हमारे यहाँ प्रायः नाना प्रकार की अज्ञानमयी प्रतिभा रमण करती रहती हैं, अज्ञान में उसको विडम्बना कहते हैं। वह मानव विडम्बनित होता रहता है जिसके द्वारा ज्ञान नहीं होता।

मुझे बेटा! परम्परा का समय स्मरण आता रहता है जब यहाँ मानव मृगराजों के मध्य में विराजमान हो जाता है, प्रभु के आङ्गन में विराजमान हो जाता है उस समय मानव का हृदय एक तरह भिन्न-भिन्न होता है क्योंकि भयभीत मानव का हृदय उस स्थान में वहीं होता है जब वह अपने में अहिंसावादी बन जाता है तो भय नहीं होता, परन्तु भय तो जब होता है जब हिंसक होता है। तो विचार-विनिमय करना है हमें अहिंसावादी बनना है। संसार में अंहिसा के भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरूप माने गए हैं। आज मैं उन स्वरूपों को वर्णन तो करने नहीं आया हूँ परन्तु इनका संक्षिप्त परिचय देना चाहता हूँ।

जीवन

संसार में जब यह विचारना चाहता है मानव कि मैं चिन्तन करना चाहता हूँ तो उसके द्वारा उसकी मौलिक सुकृता भी नहीं रह पाती क्योंकि मानव का जो सुकृत है वही तो जीवन कहलाता है परन्तु जब सुकृत चला जाता है तो मानो देखो अराज्य मृत्यु शेष रह जाती है। बेटा! ये सुकृत एक ऐसी वस्तु है जिससे हम अपने जीवन को उन्नत बना सकते हैं, हम अपने पवित्र आनन्दमयी वेदी पर विचारामान हो जाते हैं।

आयुर्वेद और जीवन

बेटा! एक समय का काल मुझे स्मरण रहता है विचार-विनिमय करना था सुकृत के ऊपर परन्तु महर्षि जमदग्नि आश्रम में–महर्षि जमदग्नि आश्रम से उसके निकट बेटा! अश्वनी कुमारों का भी आश्रम था परन्तु अश्वनी कुमारों के यहाँ आयुर्वेद के ऊपर बहुत-बहुत विचार-विनिमय होता रहता था। हमारे यहाँ परम्परा से यह विद्या रही है। हमारे आयुर्वेद आचार्यों ने भी इसका मन्थन किया है क्योंकि मस्तिष्क को दूरी कर देना और मस्तिष्कों को वहाँ ज्यों का त्यों उसको सुगठित कर देना ये अश्वनी कुमारों का एक अनुपम नृत्य था। जिससे बेटा! मेरे प्यारे महानन्द जी! ने कई काल में आधुनिक काल की चर्चा प्रगट कराते हुए कहा था क्या ये संसार आधुनिक काल का ये विज्ञान है मैंने (मेरे) आयुर्वेद के आधार से बहुत ही उज्ज्वल बन गया है। मैंने अपने प्यारे ऋषि से कहा था हे पुत्रवत्! संसार में जब आयुर्वेद के ऊपर विचार-विनिमय कोई भी करने लगता है उसमें उसकी प्रतिभा एक महान् बन जाती है परन्तु जब आयुर्वेद का अनुसन्धान नहीं कर पाते, सुन्दर-सुन्दर वनस्पतियों को नहीं विचार-विनिमय करते, तब हमारा जीवन न होने के तुल्य बन जाता है। मानो उसकी हमें जानकारी नहीं हो पाती। हम यह स्वीकार कर लेते हैं कि हमारा जो जीवन है वह नैकृतिक है। तो मेरे प्यारे! ऋषिवर आज मैं इन वाक्यों को अधिक नहीं

उच्चारण करूँगा कि जीवन और वाक्य उच्चारण करने वाला ये था बेटा! महर्षि मानो अश्वनी कुमारों के यहाँ बेटा! एक सर्वश सभा होने वाली थी। उस सभा में बेटा! विचार-विनिमय हो रहा था क्या वास्तव में मानव का उद्देश्य क्या है? बेटा! बहुत विषयों पर विचार-विनिमय होता रहता है क्योंकि संसार में जितनी भी वस्तु हैं जो भी हम प्रयोग करते हैं उन सभी का नाम वनस्पति माना जाता है। सभी को मुनिवरों! देखो औषध कहा जाता है, उनको **आपो घृत कहा जाता है।** जैसे जल तो आपो होता ही है क्योंकि **जल को जब आपो कहते हैं तो उसमें सम्पन्न सर्वत्र औषधियों का मिश्रण होता है** परन्तु वह जो मिश्रण होता है वह मानव के जीवन को मिष्ट बनाने वाला है। वही मिष्ट बेटा! देखो प्रकृति को भी अमृतमय बना देता है और प्रबल बना देता है। तो हमें यह विचार-विनिमय करना है कि हम उस महान् औषधियों के ऊपर विचार-विनिमय करते चले जाएँ जहाँ हमारा जीवन एक महानता का गमन करता चला जाए।

आध्यात्मिक विज्ञान

मेरे प्यारे! ऋषिवर जब हम प्रकृति विज्ञान के विषय में विचार-विनिमय करने लगते हैं वैदिक उपदेश हमें क्या दे रहा है आज मेरे प्यारे महानन्द जी! ने मुझे बहुत पूर्व काल में वर्णन कराया मैंने कुछ वार्त्ता भी प्रगट की चन्द्र मण्डल के ऊपर परन्तु मण्डल इत्यादियों के ऊपर तो मेरा उसमें कोई अधिक मुझे इसमें कोई अधिकता और मेरा मन का जो कृत है वह अधिक इसमें रमण नहीं कर रहा है परन्तु केवल वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यही है कि मानव जहाँ चन्द्रमा की यात्रा करने में मानो देखो उन परमाणुवाद में जितना सफलता को प्राप्त हो जाता है क्या आध्यात्मिक विज्ञान को हम अपने आङ्गन में ले जाना चाहते हैं क्योंकि हमारे यहाँ अश्वनी कुमारों ने ही तो बेटा! ऐसा अनुपम कार्य किया था वह तुम्हें स्मरण होगा कि महात्मा दधिची के मस्तिष्क को बेटा! हृदय से दूरी कर दिया और अश्व के मस्तिष्क को स्थिर कर दिया और अश्व के मुखारबिन्दु से ही

अश्वनी कुमारों ने ब्रह्म का उपदेश लिया था परन्तु वही निर्णय देखो उसके कितने भाग बनाए। तो वाक्य ये उच्चारण करने का है बेटा! क्या हमारे यहाँ एक अनुपम सुन्दर विद्या परम्पराओं से चली आ रही है।

आर्यों को उद्‌बोधन

आज मैं–इसके ऊपर हमें पुनः-पुनः विचार-विनिमय करना चाहिए। हमारी जो अनुपम विद्या है ये लुप्त न हो जाए। परन्तु वास्तव में विद्या लुप्त नहीं होती उसकी रूपरेखा प्रायः द्वितीय रूपों में हमें प्रतीत होने लगती है परन्तु उसका अभाव नहीं होता, मानो वह नष्ट नहीं होती। मानो वह परम्परा तो बनी ही रहती है वह किसी भी रूप में बनी रहे। तो इसलिए हमें उसकी रूपरेखा को बनाना है। हमें अपने जीवन में निराश नहीं होना है, अपने जीवन में ये नहीं दर्शाना है क्या आर्य संसार में नहीं पनप पाए।

ज्ञान की प्रतिभा

मेरे प्यारे! ऋषिवर जब हम और भी अनुसन्धान की दृष्टि पर जाते हैं तो मानो वह औषधियों के प्रति जो नाना प्रकार की औषधि हैं अन्न से ले करके जिनके कारण बेटा! प्राणों की रक्षा हो सके, प्राण अपना सुचारू कार्य कर सकें। मुनिवरों! देखो तभी तक हमारे यहाँ मानो औषधियों का पान किया जाता है। अन्न भी एक प्रकार की औषध है परन्तु उसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए, सदुपयोग में लाने के लिए हमें सदैव विचार-विनिमय करने की आवश्यकता रहती है। तो बेटा! देखो आज का ये हमारा वाक्य क्या कह रहा है, हमारी ये प्रतिभा क्या कह रही है। आज प्रायः मानव और देव-कन्याएँ बेटा! सभी अपने-अपने आङ्गन में देखो प्राङ्गण प्रहे मानो देखो नाना प्रकार की अपने प्राङ्गण में परणित रहती हैं। देखो बिना ज्ञान के–ज्ञान होना चाहिए, ज्ञान की प्रतिभा होनी चाहिए। हमारे यहाँ बेटा! मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हें प्रगट कराया था क्या मुदग्ल गोत्र में उत्पन्न होने वाली कन्या बेटा! पाँच वर्ष की ब्रह्मवेत्ता बन सकती है (बन गई थी) परन्तु देखो,

चाक्राणी गार्गी भी बेटा! देखो बारह वर्ष की ही ब्रह्मवेत्ता बनी। परन्तु देखो, यहाँ ब्रह्मवेत्ता बनना है ब्रह्म के ऊपर विचार-विनिमय करना है क्योंकि वह जो ब्रह्म का विचार ऐसा विचार है जो मानव के हृदय को मानो प्रसन्नवत् बना देता है और कोई विचार ऐसा नहीं है जो मानव को प्रसन्न बना सके। क्योंकि मानव संसार में परणित होता है, नाना प्रकार की त्रुटियों में लगा रहता है। मुनिवरों! देखो एक-दूसरे की त्रुटियों में लगा रहता है। जब ब्रह्म का विचार आता है तो ब्रह्म के विचार में ही बेटा! मानो नमस्कारम् ब्रव्हे मानो देखो नमः हो जाता है, नत-मस्तिक हो जाता है। आज हम सभी को ब्रह्म के आगे नत-मस्तिक होना है क्योंकि ब्रह्म एक ऐसा है जो ब्रह्मे उसमें बेटा! सर्व जगत समाहित हो रहा है।

आज हमें ब्रह्म के ऊपर विचार-विनिमय करना है जैसे मन की प्रतिभा है, मन की प्रतिभा के ही आङ्गन में बेटा! सर्वश इन्द्रियाँ ओत-प्रोत हो जाती हैं। मानो देखो यहीं तक नहीं ये सर्वत्र प्रकृति का इतना व्यापार है, प्रकृति में इतना आवागमन हो रहा है मानो ये प्रकृति हमें भिन्न-भिन्न रूपों में परणित हो रही है, ये सब उस मेरे प्यारे मनीराम! का ही तो कार्य है। यह वही मनीराम है जो मानव के जीवन का भी विभाजन कर देता है। बेटा! जो नाना चन्द्र मण्डलों का भी विभाजन करने लगता है। आज हमें उस महान् प्रतिभा को जानना चाहिए। ये प्रतिभा हमारे जीवन में उद्बुद्ध हुई है जैसा मैंने पूर्व काल में बेटा! इसकी विवेचना की है।

विज्ञान

आज भी मुझे स्मरण आती चली जा रही है। मुनिवरों! देखो यहाँ महर्षि गौतम इत्यादियों की विवेचना जब आती है, महात्मा अरुण की विवेचना आती है तो उस समय मुझे यही प्रतीत होता है कि हम कहाँ जाएँ नक्षत्रों के ऊपर वार्त्ता आती है। आज प्रायः मानव कहता रहता है, प्रायः विचार-विनिमय होता रहता है क्या हम संसार में उत्तम बनना चाहते हैं। यहाँ तो विज्ञान की आवश्यकता है। विज्ञान प्रत्येक मानव की प्रतिभा में

रहना चाहिए क्योंकि बिना विज्ञान के मानव संसार में कोई कार्य कर ही नहीं पाता।

माता-पिता का विज्ञान

मेरे प्यारे! ऋषिवर मुझे एक वाक्य स्मरण आ रहा है। एक समय बेटा! अश्वनी कुमारों के, अश्वनी कुमारों ने बेटा! महात्मा जमदग्नि आश्रम में एक सभा की, उस सभा में केवल एक ही विचार-विनिमय होना था कि संसार में मानो देखो सन्तान उत्पत्ति कैसी होनी चाहिए। सन्तान के लिए हमें क्या-क्या कार्यक्रम करना है जिससे हम संसार में वास्तव में पुत्रवत् बन करके हम भी वास्तव में मुनिवत् कहला सकते हैं। मेरे प्यारे! ऋषिवर उस सभा में आदि ऋषि-मुनि सभी विराजमान हुए। समय मिला तो बेटा! अपना भी जाने का वहाँ सौभाग्य प्राप्त होता रहा। मुझे बेटा! वह सभा ऐसी स्मरण आती रहती है जैसे आज ही वह सभा हुई हो। मेरे प्यारे! ऋषिवर देखो उस सभा में महर्षि मुदग्ल गोत्र में उत्पन्न होने वाले मानो शाडिल्य ऋषि महाराज को उसका सभापति बनाया गया। जब सभापति बन गए, सभापति बन जाने के पश्चात् बेटा! नाना ऋषियों के विचार-विनिमय होना शुरू हुआ।

बेटा! देखो, महर्षि रेवक जी उपस्थित हुए। महर्षि रेवक जी का आदर हुआ। तब महर्षि रेवक जी ने शाण्डिल्य से प्रश्नों की बौछार की। उन्होंने कहा प्रभु! विचार क्या है? उन्होंने कहा विचार ये है कि संसार में मानो देखो यह गृह जो आश्रम है, ये धोखा है। मानो गृह आश्रम का क्या कर्त्तव्य है? मुनिवरों! देखो विचार-विनिमय होने लगा उस समय ऐसा कहा जाता है चाक्राणी गार्गी ने भी यह कहा कि मैं भी इसको जानना चाहती हूँ परन्तु उन्होंने बेटा! महर्षि शाण्डिल्य मुनि से ये प्रश्न किया क्या महाराज मैं ये जान सकती हूँ क्या संसार में मानो देखो हमारे जीवन का मेरा जो जन्म हुआ है, मैं अपनी माता के गर्भस्थल में पनपी हूँ क्या गर्भस्थल में भी क्या कोई नक्षत्र से या प्रकृति के आवेश उसके समीप होते हैं अथवा नहीं? उस

समय शाण्डिल्य जी ने कहा मैंने तो आयुर्वेदों का अध्ययन करके ऐसा जाना है क्या मानो हमारे यहाँ देखो यह षोडश रात्रि होती हैं, षोडश रात्रि होती हैं षोडश रात्रियों में देखो षोडश प्रकार के नक्षत्र होते हैं। मानो प्रायः नक्षत्र का प्रायः मानो देखो रात्रि से सम्बन्ध रहता है। इसी प्रकार जब मेरी प्यारी माता के गर्भस्थल में मानो देखो कोई सुकृत जाता है, जब पुरुष का सुकृत जाता है, सुकृत के जाने मात्र से ही बेटा! देखो वहाँ कोई मानो देखो गर्भ की स्थापना हो जाती है। जब गर्भ की स्थापना होती है, जब स्थापित हो जाता है। मानो प्रारम्भिक ही आत्मा का प्रविष्ट होता है माता के जरायुज में उसी समय मानो ऐसा कहा गया है यदि देखो पुष्प नक्षत्र का प्रतिबिम्ब रहता है, पुष्प नक्षत्र और जेठाय नक्षत्र दोनों की धारा उसमें मिश्रण होती है तब मानो देखो वह बालक संसार में एक महानता को प्राप्त होता रहता है। अन्तरिक्ष में जो रमण करने वाले जो पुनीत पवित्र आत्मा हैं वही आत्मा देखो उस माता के गर्भस्थल में समूचे प्राण वेत्ता! देखो उसका प्रादुर्भाव मानो वहीं उद्बुद्ध होने लगती है।

ऐसा हमारे यहाँ क्योंकि आचार्यों ने बेटा! भिन्न-भिन्न प्रकार के आवेशों में आ करके विचार-विनिमय किया है और उन्होंने कहा है सञ्चय करने के पश्चात् कि माता को ये विचार-विनिमय करना है, माता के विचार, पितर के विचार उन विचारों से ही मानो वेदी के ऊपर बेटा! भिन्न-भिन्न प्रकार की अन्वेषणा का ही एक सर्वोत्तम उत्सव होता है। आचार्य कहता है, ऋषि कहता है कि हमें तो वास्तव में ही ये विचार-विनिमय बहुत ही अनुसन्धान पूर्वक करना है। बेटा! देखो प्रायः मानव जब अनुसन्धान की वेदी पर जाता है, मेरी प्यारी माता जब अनुसन्धान की वेदी पर जाती है तो उस समय ये भी प्रतीत होता है क्या मेरा जीवन तो प्रत्येक देवता से पिरोया हुआ जीवन है। जैसे मुनिवरों! देखो यज्ञशाला में अशुद्ध सामग्री अर्पित करने से बेटा! देखो जब गन्ध हो जाती है इसी प्रकार हे माता! तेरी जो पवित्र वेदी है मानो यदि इसमें उज्य सत्र प्रवहाः तमे वाक प्रेही। मानो देखो

अशुद्ध हो गया, सुकृत चला गया तो तेरा जो पुण्यवत् है वह नष्ट हो जाएगा।

मेरे प्यारे! ऋषिवर मैं इस सम्बन्ध में अधिक विचार-विनिमय करने नहीं आया हूँ। केवल यह है वाक्य को बेटा! विस्तारपूर्वक इसलिए नहीं प्रगट करना चाहता हूँ क्योंकि मेरा आज का ये वास्तव में विषय नहीं था, मैं तो केवल अपने जीवन की एक अनुपम धारा जो मैंने बेटा! श्रवण किया उन वाक्यों को प्रगट कराता चला जा रहा था। माता ने बड़े सुन्दर भाव से हे माता! तू बड़ी सौभाग्यनी है जपुत्रों सम्भम्बे आपनोति अश्वति लोकाः सम्भवति पिता महा। मानो देखों जब तेरी वेदी से एक पुत्र का जन्म होता है परन्तु जन्म लेने के पश्चात् उसकी सुकृता मानो तेरे सुकृत को वह पुत्र जब हनन कर देता है तेरा पुत्र मोह नष्ट हो जाता है। माता तू वास्तव में विज्ञानवेत्ता नहीं थी यदि विज्ञानवेत्ता होती तो यहाँ राम और कृष्ण जैसे बालक जब कणाद और गौतम जैसे बालकों का नाम, महान् पुरुषों का जन्म होता है तो माता की प्रतिभा उससे पूर्व उज्ज्वल बन जाती है।

मेरे प्यारे! ऋषिवर आज मैं इस वाक्य को अधिक प्रगट करने नहीं आया हूँ, केवल वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये है कि मानव को अपने सुकृत के ऊपर विचार-विनिमय करना है। संसार में बेटा! जब विज्ञान होता है क्योंकि विज्ञान की प्रतिभा मानव के समीप होनी चाहिए। आज मुझे हमारे प्यारे महानन्द जी! जब मुझे ये वर्णन कराते हैं कि आज का विज्ञान बड़ा प्रबल है तो मैंने एक समय अपने प्यारे ऋषि से एक वाक्य कहा था हे पुत्रवत्! क्या इस प्रकार का विज्ञान है, क्या आयुर्वेद का विज्ञान भी है या नहीं? उस समय उन्होंने कहा कि आयुर्वेद का विज्ञान नहीं है। अहा! जब तक मेरी पवित्र माता आयुर्वेद की विज्ञानवेत्ता नहीं बनेंगी तब तक हमारा राष्ट्र, हमारा समाज किसी भी काल में उन्नत नहीं बन सकेगा क्योंकि उसका उन्नत बनना हमारे जीवन के लिए बहुत अनिवार्य है। हमारा जीवन तो वेदी में पनपता है। आज हम विज्ञान के युग में जाने के लिए

तत्पर हो जाते हैं। मुझे स्मरण आता रहता है मेरे प्यारे! महानन्द जी ने मुझे वर्णन कराते हुए कहा था कि विज्ञानवेत्ता बनना हमारे लिए बहुत अनिवार्य है। मानो विज्ञानवेत्ता बनना बेटा! कोई महान् कार्य नहीं है परन्तु जब शारीरिक विज्ञान–जब मानव देखो जब सत्यवत् विज्ञान मानव के समीप होता है, उसका क्रियात्मिक होता है उसी काल में बेटा! यह समाज और राष्ट्र उन्नत बना करते हैं।

आज मैं बेटा! उस विज्ञान के ऊपर चर्चा कर रहा हूँ जो माता-पिता का विज्ञान है। जो मुनिवरों! देखो विधिवत् विज्ञान है। मानो देखो कौन-सी रात्रि में गर्भास्थिति होने से, सुकृत देने से बेटा! क्षेत्र प्रकृति जीवाणु का जन्म होता है, कौन-सी रात्रि के प्रभाव से बेटा! कौन-से नक्षत्र के प्रभाव से कौन-सा आत्मा उस माता के पुत्ररित में परणित हो जाता है। बेटा! ये सब अनुसन्धान का विषय कहलाया गया है क्योंकि आपो से ही हमारा सम्बन्ध है। हमारे यहाँ आचार्यों ने कहा है बेटा! जब एक समय महर्षि शाण्डिल्य जी से एक बार कहा गया क्या महाराज देखो आपो क्या है? उन्होंने कहा कि जितना देने वाला समाज है सभी को आपो कहा जाता है। मानो देखो जितना भी आपो शक्तिशाली होता है उतना ही मुनिवरों! देखो वह आपो की ही प्रतिष्ठा होती रहती है। परन्तु इतना वह केवल रह जाता है उतनी ही उसकी प्रतिष्ठा सूक्ष्म होती रहती है। तो मुनिवरों! देखो जो भी वस्तु है नीरत्व ही मानो आपो कहलाया जाता है। नेत्रों में भी आपो की प्रतिभा है। मुनिवरों! देखो समुद्रों में भी आपो है, सूर्य की किरणों में भी आपो की प्रतिभा रमण कर रही है। चन्द्रमा की कान्ति भी आपो से ही उत्पन्न, आपो से ही अपने प्रतिभा में संसार में याज्ञिक है।

आपो

मुनिवरों! ये जो आपो है, आज हमें इसे जानना है क्योंकि आपो ही माता के गर्भस्थल में जाने के पश्चात् बेटा! पुत्रवत् बन जाता है। वही

आपो है जो माता के गर्भस्थल में बेटा! देखो पुत्रवत् बन जाता है। पुत्रवत् बन जाने के पश्चात् वही तो हमें विचारना है क्या वह आपो हमारा कितना शक्तिशाली होना चाहिए, उस आपो में कितना अनुपम बल होना चाहिए। मेरे प्यारे! ऋषिवर हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों में कौन-सा ऋषि ऐसा है इसके ऊपर विचार-विनिमय नहीं करता रहता। परन्तु उसका विचार मानो ये सन्तोष का विषय होना चाहिए, सङ्कोच नहीं होना चाहिए। मानव जब सङ्कोच से रहित होता है मानो अपने हृदय से ही हृदय के पापों से रहित हो करके बेटा! विचार होता है, उस विचार में एक महान् सुकृत होता है। तो मेरे प्यारे! ऋषिवर आपो को हमें विचार-विनिमय करना है क्योंकि आपो ही प्राण के साथ में रमण करने वाला है। यदि आपो नहीं होगा तो प्राण की भी शुद्धि कभी नहीं हो पाएगी। मेरे प्यारे! ऋषिवर जब मानव सांस पर सांसों की गति बनती है उस समय आपो ही प्राण निगलता है। वह सांसों को मुनिवरों! देखो - - - जब प्राण नहीं होगा तो बेटा! सांस से भी सुकृत नहीं बनेगा और जब सुकृत नहीं होता तो नाभि केन्द्र से प्राण चलकर के मानो जहाँ तक चला जाएगा वहाँ तक संघर्ष ही करता चला जाएगा। मेरे प्यारे! ऋषिवर जहाँ जैसे अग्नि को अग्नि प्रदीप्त हो रही है, अग्नि में प्रतिष्ठा प्राप्त करना है, अग्नि महान् उज्ज्वल हो रही है, अग्नि में बेटा! देखो जल का सुकृत नहीं है, जल का सुकृत सूक्ष्म होने के नाते मुनिवरो! देखो वह मानव को बहुत ही रौद्र देता है, इसी प्रकार यदि प्राण में भी जल का सुकृत नहीं होगा तो बेटा! देखो मानव के शरीर को भस्म कर सकता है। मेरे प्यारे! ऋषिवर इसलिए हमें विचार-विनिमय करना है कि हमारा जो जीवन है, **हमारा जो आपो है वही हमारा जीवन है** क्योंकि सूत्र पे सूत्र इसी को कहा जाता है। आज हमें यह विचार-विनिमय करना है जिससे हमारे जीवन की प्रतिभा एक महान् महानता से सुगठित हो जाए। जहाँ मुनिवरों! देखो सुकृत होता है वहीं तो मानव का जीवन सुन्दर बनता है। हे मेरी प्यारी! माता तू अपने आपो को सुन्दर बना क्योंकि जो आपो है, उसी में तो जीवन है, उसी में ही तो मुनिवरों! देखो मानव का सुकृत विराजमान रहता है।

विज्ञान में ही जीवन है

मेरे प्यारे! ऋषिवर आज मैं इस वाक्य की विवेचना को विलम्ब नहीं देने जा रहा हूँ वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः हमारा क्या है? क्या हम इस महान् देखो सुन्दर वेदी पर विज्ञानवेत्ता बनते चले जाएँ क्योंकि विज्ञान को ही हमारा कर्त्तव्यवत् कहलाया जाता है। क्योंकि यदि हमारे द्वारा विज्ञान नहीं होगा तो हमारा जीवन भी नहीं होगा क्योंकि विज्ञान तो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार होता है। जन्म से ही विज्ञान के युग में आते हैं क्योंकि जो भी हम दृष्टिपात करते हैं उस विज्ञान की भी कुछ जिज्ञासा रहती है। एक मानव मधुर-मधुर चर्चा कर रहा है परन्तु उसके जानने की कितनी उत्कृष्ट इच्छा होती है। एक मानव चन्द्रमा की यात्रा की चर्चा कर रहा है, यन्त्रों की विवेचना कर रहा है जब मानव को जिज्ञासा होती है क्या मैं इसको जानकर ज्ञानत्व को प्राप्त करूँ क्योंकि मेरा ज्ञान इस चीज से सूक्ष्म न रह जाए। मानो मैं प्रबल हो जाऊँ यह मानव की प्रवृत्ति स्वाभाविक बन जाती है। परन्तु इसी प्रकार जो भी परमात्मा का मानो देखो भौतिक विज्ञानवेत्ता अपने परमाणुवाद से मानो विद्युत को ले करके बेटा! देखो अपना महान् देखो नाना प्रकार के यन्त्रों को मानो देखो दूरी-दूरी दे करके उसका स्वभाव परिवर्तित कर सकते हैं। इसी प्रकार हमारे आचार्यों ने कहा है जब हम अपने सुकृत को जान लेते हैं, अपने हृदय को जान लेते हैं हमारा हृदय कैसा है क्योंकि जितने भी योगीजन होते हैं वो हृदय में ही प्रतिष्ठित हो जाते हैं, हृदय में ही उनकी प्रतिष्ठा हो जाती है क्योंकि हृदय एक प्रकार की आहुति देने की सुन्दर वेदी है। आज हमें हृदय रूपी जो अव्यक्त है, मानो जो सर्वोपरि है मानो हमें देखो उसमें आहुति प्रदान करनी है।

हमारे आचार्यों ने बेटा! ब्रह्मवेत्ताओं ने कहा है कि हमें इस वेदी को उज्ज्वल बनाना है। वेदी क्या है? अहा! हृदय रूपी जो वेदी है बेटा! हृदय में ही देखो योगीजन अपने मन और प्राण को प्रतिष्ठित कर देते हैं। इसी मानव हृदय के कारण ही बेटा! आत्मा को जाना जाता है क्योंकि **हृदय में**

ही आत्मा प्रतिष्ठित रहती है। आत्मा हृदय कक्ष में रहने वाली है। बेटा! देखो इस आत्मा को लोक प्रवाहाणि–असुतो में स्वीकार करते रहते हैं। जब हम यह विचारते हैं हमारे यहाँ आत्मवेत्ता है जो कि आप में जैसे भौतिक विज्ञानवेत्ता बेटा! परमाणुओं को सुक्रित करता रहता है। वह परमाणुओं में सुक्रत गति आती रहती है, कहीं ध्रुवा गति आती है, कहीं व्यापक गति आती है इसी प्रकार की प्राण वाली गति आती है। उन गतियों को संयम करने वाला एक महान् मानो वैज्ञानिक बेटा! चन्द्रमा में जाने वाला यन्त्र क्या, मङ्गल में जाने वाला यन्त्र, क्या मानो बुध में जाने वाला यन्त्र क्या इन सब यन्त्रों पर बेटा! वह एक स्थान में निश्चित करके उसके स्वभाव को परिवर्तित करता रहता है। मेरे प्यारे महानन्द जी! .....

शेष अनुपलब्ध

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का तप

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं। और उसका अनन्तमयी ये ज्ञान और विज्ञान है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही अन्वेषण करता रहा है। और अनुसन्धान करता रहा है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तवान् हैं। और उसका अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है। क्योंकि हमारे यहाँ नाना विज्ञानवेत्ता, नाना प्रकार की ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ते रहते हैं। परन्तु जब वह अपनी उड़ाने उड़ने लगता है तो वह परमपिता परमात्मा की परिनिधि में ही रमण करता रहता है। क्योंकि विचारणीय कोई विषय नहीं रहता है जिससे वह ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ने लगे। क्योंकि उसकी उड़ाने अपने में ही सीमित रहती है और अपने में ही अपनेपन को वो विचारता रहता है।

आओ मुनिवरों! देखो इस सम्बन्ध में कोई हम तुम्हें विशेष विवेचना देना नहीं चाहते। विचार केवल यह है कि हम केवल परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तमयी, विज्ञानमयी धारा को हम सदैव अपने में धारण करते रहें। जिससे हमारा मानवीयत्त्व और मनस्तत्त्व पवित्रता को धारण करता रहे। तो बेटा! आज का हमारा वेद का मन्त्रः, नाना प्रकार की उड़ाने उड़ रहा है। "आभाम् ब्रह्मणम् ब्रव्हा, क्रतम देवत्वाम् लोकाः" क्योंकि

वे परमपिता परमात्मा देव है और देवता का भी देवता कहलाया जाता है। जिस देवता को हम सदैव परम्परागतों से ही अपने में अन्वेषण करते रहे हैं। और विचार विनिमय करते रहते हैं कि वे परमपिता परमात्मा जो अनन्तमयी हैं। अनन्तमयी जो उसका ज्ञान है, उसका विज्ञान है और उसका ये मानो रचनामयी जगत है। हम उस परमपिता परमात्मा की महती और उस अनन्तवान् को अपने में धारण करते रहें। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्य नाना रूपों में मानो प्रायः हमें दृष्टिपात आता रहता है। तो हमारे यहाँ वेद का मन्त्रः एक-एक महानता की उड़ाने और विचार-विनिमय कर रहा है। क्योंकि परमात्मा की जो अमूल्य वाणी है, परमात्मा का जो अमूल्य मानो ज्ञान और विज्ञान है वो वेद की एक-एक आभा में निहित रहता है। तो आओ मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार-विनिमय ये कि हमारे यहाँ ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों में विद्यमान हो करके नाना प्रकार का अन्वेषण करते रहे हैं, नाना प्रकार की आभा में सदैव रत्त रहे हैं।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का विद्यालय

आओ मुनिवरों! देखो, आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ। जहाँ ऋषि-मुनि अपने में बेटा! विचार-विनिमय करते रहे हैं और अन्वेषण करते रहे हैं। हमारे यहाँ बेटा! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का जो विद्यालय है वह अपने में बड़ा विशिष्ट रहा है और वह अपने में विचारणीय रहा है। उनके यहाँ बेटा! त्याग और तपस्या की महिमा का प्रायः वर्णन होता रहा है। तो मेरे पुत्रों! देखो, ''हिरण्यम् ब्रह्माः क्रतम् देवत्वाम् देवो लोकाः'' वेद का वाक्य कहता है कि जब मानव अपनी तपस्या में परणित होता है और वह तपश्चर को प्राप्त हो जाता है तो अपने में ही अपनेपन को बेटा! दृष्टिपात करने लगता है। मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का विद्यालय अपने में बड़ा विचित्र रहा है। और उन्होंने बेटा! देखो, प्रातःकालीन उनके यहाँ ब्रह्मचारियों के मध्य में मानो देखो, अग्निहोत्र अथवा याग करते हुए और ऋषि का उसके पश्चात्

बेटा! उपदेश प्रारम्भ हुआ। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, हे ब्रह्मचारियों! वेद मन्त्र में ये आया है कि **"तपम् हिरण्यम् तपाः दिव्यम् ब्रह्मणाः देवत्व तपाः"**। क्योंकि ये संसार सर्वत्र मानो तपमय माना गया है। इसलिए प्रत्येक मानव को यहाँ तपस्वी होना चाहिए और बिना तप के मानव अपने में मानवीयता को धारण नहीं कर सकेगा।

तपस्वी बनने की प्रेरणा

मेरे प्यारे! देखो, उन ब्रह्मचारियों में यज्ञदत्त ब्रह्मचारी उपस्थित हुए और यज्ञदत्त ने कहा, हे प्रभु! यह तपस्या कैसे करें? तो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या यहाँ प्रत्येक वस्तु तप रही है। मानो ब्रह्मचारी विद्यालय में तप रहा है तो आचार्यत्त्व को प्राप्त हो जाता है। मानो देखो, मेरी प्यारी माता तपायमान है। वह तपने के पश्चात् ममतामयी बन जाती है। इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, सूर्य प्रातःकाल से साँयकाल तक तपता रहता है और वो संसार को तपाता रहता है। और वो तपोमयी कहलाता है। नाना प्रकार की ऊर्ज्वा देता है। नाना पृथ्वियों को तपा रहा है। वो तपायमान कर रहा है। तो वेद का ऋषि कहता है, इसलिए मानव को तपस्वी बनना चाहिए। क्योंकि यहाँ प्रत्येक वस्तु तप रही है। जब ये पृथ्वी तपायमान होती है ग्रीष्म ऋतु में। तो मानो देखो, जब वर्षा काल आता है तो ये तपने के पश्चात् मुनिवरों! नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म दे देती है। इसी प्रकार हमारा जो वैदिक साहित्य है अथवा वेद में जो आख्यायिकाएँ आती रहती हैं उनमें ये कहा है कि **"तपम् तपश्चम् ब्रह्मणाः लोकाम् राष्ट्रतौ।"** मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक मानव को यहाँ तपना चाहिए। राजा के राष्ट्र में यदि राजा तपा हुआ होता है तो प्रजा भी तपायमान होती है। और जब प्रजा में तप होता है, राजा में होता है तो बेटा! देखो, राष्ट्र में सुमति आ जाती है, सम्मति आ जाती है। पवित्रता आ जाती है और वह मानो देखो, राष्ट्र ऊर्ध्वा को प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, विद्यालय में आचार्य जब तपे हुए होते हैं तो तपने के पश्चात् ही मुनिवरों! देखो

विद्यालय अपने में पवित्रता को धारण करने लगते हैं। तो मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, क्या हे प्रभु! अमृतम् ब्रह्मणे, हे ब्रह्मचारियों, तुम स्वयँ तपस्वी बनो। क्योंकि तपने के पश्चात् ही यह मानवत्त्व पवित्रता को प्राप्त हो सकता है।

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि ने जब ऐसा कहा तो ब्रह्मचारियों ने कहा, हे प्रभु! आपका वाक्य तो यथार्थ है परन्तु तपस्या है क्या? तो वैदिक ऋषि ने कहा है क्या मुनिवरों! देखो **तप उसे कहते हैं** जो मनस्तत्त्व को अपने में तपायमान कर लेता है। और इन्द्रियों को जब अपने में तपायमान कर लेता है। इन्द्रियों को जब अपने में तपा लेता है और मन में वशीभूत कर देता है। और मन प्राण में समाहित हो जाता है तो बेटा! उसे तप कहा जाता है। बेटा! आचार्यों ने, हमारे यहाँ वर्णन करते हुए कहा है कि हे मानव तू तपस्वी बन। क्योंकि परमात्मा ने जब सृष्टि का सर्जन किया तो मानो वो स्वयँ उसकी उग्र क्रिया बनी और उग्रता से ही मुनिवरों! देखो इस संसार की रचना होती है अथवा उसका एक-दूसरे में समावेश हो जाता है। तो इसलिए यह संसार रचनामयी दृष्टिपात आने लगता है। तो इसलिए वेद का ऋषि कहता है, क्या यहाँ प्रत्येक मानव को तपस्वी बनना चाहिए। हे ब्रह्मचरिष्यामि! तुम अपने में तपस्वी बनो।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का तप के लिए गमन

मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के वाक्यों को पान करने वाले ब्रह्मचारियों ने अपने में उन वाक्यों को स्वीकार किया। स्वीकार करने के पश्चात् मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने एक वाक्य कहा। वेद मन्त्र का उद्गीत गाया। उन्होंने कहा, **"तपम् ब्रह्मणेः तपम् रुद्राहम् प्रमाणम् येषो सम्भवम् ब्रह्माः तपाः।"** हे ब्रह्मचारियों! मेरी इच्छा ऐसी है कि मैं तप करने जा रहा हूँ। उन्होंने कहा, बहुत प्रियतम्। ब्रह्मचारियों ने कहा, प्रभु, ये तो हमारा सौभाग्य है क्योंकि विद्यालय में जितना तपा हुआ आचार्य होता है उतना ही विद्यालय पवित्र बनता है। और उनसे महानता

की प्राप्ति होती है। तो प्रभु आप तप करने के लिए जाइए। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, मेरे पुत्रों! ब्रह्मचारियों से आज्ञा पा करके और वह भयङ्कर वन में जा पहुँचे और वनों में जा करके मुनिवरों! देखो, वेद मन्त्रों का उद्गीत गाने लगे। वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए, उन्होंने वेद मन्त्रों का उद्गीत गाया **"तपम् हिरण्यम् तपम् ब्रव्हे क्रतम् मनाः वर्णम ब्रह्मेः तपम् सम्भवे प्रव्हे लोकाम् वृत्ति देवाः"**।

वेद का आचार्य बेटा! ये अपने में अन्वेषण करने लगा, अनुसन्धान करने लगा कि वेद मन्त्र यह कहता है, क्या जो भी मानव तप से ही अपने गृह को, अपने आश्रम को त्यागता है। मानो देखो, जो उसके मन से सम्बन्धित जो प्राणी होते हैं उनको वह सन्तुष्ट करके मुनिवरों! देखो तप कर सकता है। अन्यथा वह तप जब करता है तो उसके मन की तरङ्गें मानो उसे, मन को प्रभावित कर देती हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने, अपने में विचारने लगे, क्या मेरी दो पत्नियाँ हैं। एक का नाम कात्याणी, तो एक का नाम मैत्रेय है। मुझे दोनों को सन्तुष्ट करना है। तभी मैं तपस्या कर सकूँगा।

महर्षि द्वारा कात्याणी से सम्मति

बेटा! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज भ्रमण करते हुए बेटा! अपने गृह में पहुँचे। मेरे पुत्रों! सबसे प्रथम वह कात्याणी के द्वार पर पहुँचे। कात्याणी ने उनके चरणों को स्पर्श किया। और चरणों को स्पर्श करके कहा, कहिए भगवन्! आज बिना सूचना के आपका आगमन हुआ है, इसके मूल में क्या है? मेरे पुत्रों! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, क्या हे देवी! मैं प्रातःकालीन आज ब्रह्मचारियों को वेद का अध्ययन करा रहा था। और वेद मन्त्रों में आ रहा था **"तपम् हिरण्यम् तपम् ब्रह्माः लोकाम् तपम् ममब्रव्हे देवत्वाम् देवासन्धम् तपम् सूर्यश्चतम् देवा अदिति।"** हे देवी! देखो, वेद मन्त्र में आया है कि प्रत्येक पदार्थ संसार का तपायमान है। अदिति बन करके तप रहा है सूर्य। उदेन बन करके उदय हो

रहा है। परन्तु मेरी इच्छा ये है कि देवी! मैं भी तप करने जा रहा हूँ। अब मैं तुम्हारी सम्मति लेने के लिए आया हूँ। क्या तुम्हारी क्या सम्मति है। क्या मैं तप करने के लिए चला जाऊँ?

मेरे प्यारे! देखो, कात्याणी ने कहा, प्रभु, ये तो हमारा बड़ा सौभाग्य है। क्योंकि जिस गृह में मानो पति तपस्वी होता है, वह गृह तो तपायमान हो जाता है। हे प्रभु! यह हमारा सौभाग्य है। आप तप करने के लिए जाइए भगवन्! ''इन्द्राणी भूतम् ब्रह्मध्सेः'' कात्याणी ने कहा, प्रभु इन्द्रियों के ऊपर सँयम कीजिए। और आप तप करने के लिए जाइए। ये तो हमारा बड़ा सौभाग्य है। मेरे पुत्रों! देखो, जब काल्याणी ने ऐसा कहा, तो ऋषि बड़े प्रसन्न हुए। ऋषि ने कहा, धन्य है देवी!

माता मैत्रेय को महर्षि द्वारा मधु-विद्या

मेरे प्यारे! उनकी द्वितीय पत्नी का नाम मैत्रेय था। और मैत्रेय के जब समीप पहुँचे तो मैत्रेय ने भी उसी प्रकार उनका स्वागत किया। और मैत्रेय ने कहा, कहिए भगवन्! ''ब्रह्मणे क्रतो देवत्वाम् लोकाम्''। हे प्रभु! आप देखो गृह लोक में पधारे हैं। आपके आने का कारण क्या है बिना सूचना के? मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा ''तपम् हिरण्यम् तपम् ब्रह्मेः लोकाम्, तपम् सम्भव ब्रहे क्रतम् देवत्वाः''। हे देवी! मैं तप करने के लिए जा रहा हूँ। तुम्हारी क्या इच्छा है? क्योंकि तप करना ही मानव का कर्त्तव्य है। तो देवी मुझे आज्ञा दो, मैं तप करने जा रहा हूँ। मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहता है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब ये कहा, तो मैत्रेय ने कहा हे प्रभु! हमारे यहाँ यह आया है, यदि आप तप करने चले जाओंगे तो मैं प्रभु आपकी पत्नी हूँ। मेरा क्या बनेगा? उन्होंने कहा, हे देवी! तुम अज्ञानता में पहुँच गयी हो। अज्ञानता के शब्दों को प्रतिपादित न करो। मानो देखो, ये जो तपम् ब्रह्मणाः है ये तो अपना ही क्रियाकलाप है। अपने में ही मानव रत्त रहता है। हे देवी! देखो, यह अज्ञान तुम्हें कहा से आया है। मानो पति जो होता है, वह पत्नी तक सीमित होता है। यदि वह

अपने लिए तपश्चर, अपने लिए पति बन जाए। अपने में पति उसे कहते हैं जो अधिपति कहलाता है। जो इन्द्रियों का स्वामित्व होता है वह अधिपति कहलाता है। हे देवी! यदि मैं अपने लिए स्वतः पति बन जाऊँगा तो मेरा कल्याण हो जाएगा। हे देवी! पत्नी जो होती है वह पति तक सीमित रहती है। परन्तु यदि वह अपने लिए पत्नी बन जाए, अपनी इन्द्रियों पर सँयमी बन जाए। मन और प्राण की दोनों की पुट लगाना जान जाए तो हे भगवन् देखो ये **''पत्नम् ब्रह्मणाः लोकाम्''** ये अपने लिए पत्नी बन करके प्रभु को सखा स्वीकार करके मानो सागर से पार हो सकते हैं। हे देवी! देखो पुत्री जो होती है, वह पिता तक सीमित रहती है। यदि वह अपने लिए पुत्री बन जाए। क्या मेरा स्वामी, मेरा पिता तो मानो परमपिता परमात्मा है और मैं उसी में रत्त होना चाहती हूँ। तो मानो देखो, पुत्री का कल्याण हो जाएगा। हे देवी, पुत्र जो होता है वह माता तक सीमित होता है और यदि वह अपने लिए पुत्र बन जाए। प्रभु का पुत्र बन करके रहे तो देवी! उसका कल्याण हो जाएगा। इसलिए जो भी मानव अपना कर्म करता हुआ, अपने लिए किया करता है। हे देवी! जो भी संसार में क्रियाकलाप हो रहा है वह सर्वत्र मानो अपने लिए हो रहा है। देखो चित्त जो होता है आत्म तृप्ती के लिए वह एकत्रित कर लेता है। परन्तु देखो आत्मा अपने में ही अपने में प्रतिष्ठित हो जाती है। हे देवी देखो, जो अपने लिए क्रियाकलाप कर रहा है। परन्तु देखो जो भी संसार में लोकप्रियता को धारण करता है, लोकप्रियता में रत्त हो जाता है वह भी अपने लिए ही क्रियाकलाप करता रहता है। हे देवी, **इस संसार में जो भी मानव अपने में क्रियाकलाप कर रहा है वो अपने में ही तृप्त होने के लिए कर रहा है।** परन्तु ये मधु विद्या है। इस मधु विद्या को जानने के लिए तुम सदैव तत्पर हो जाओ।

तुम्हें ये प्रतीत है, जब मेरा तुम्हारा आत्म विज्ञान के ऊपर शास्त्रार्थ हुआ था। उस समय मानो देखो, मैंने आत्मा के सम्बन्ध में क्या कहा था। वह आत्मा एक चेतना है और ज्ञान और विज्ञान से युक्त रहने वाला है। मानो ये आत्मा देखो ज्ञान और प्रयत्न से देखो प्रियम ब्रहे अपने में ही रत्त

रहने वाला है। हे देवी! जो भी मानव अपने में ही कर्म करता रहता है वह अपने में ही सिमट जाता है। अपने में ओत-प्रोत हो जाता है। अपने में ही वो प्रतिष्ठता को प्राप्त कर लेता है। जैसे मानो देखो, ये पृथ्वी जब जल में प्रतिष्ठित हो जाती है तो यह आपोमयी कहलाती है। मानो आपो जब अग्नि में प्रतिष्ठित हो जाता है तो मानो देखो, अग्निमयी कहलाता है। हे देवी! इसी प्रकार संसार एक-दूसरे के लिए कटिबद्ध हो रहा है। एक-दूसरे में रत्त हो रहा है। **तो मानो देखो अपने में ही अपनेपन को दृष्टिपात करते रहो।** हे देवी! मानो देखो, ये अज्ञान है, जो तुम उच्चारण कर रही हो। मानो देखो, मैं कर्म करूँगा, आत्मीयता में पहुँच जाऊँगा तो अपने लिए पहुँचेगा। परन्तु देखो ये तो सब क्रियाकलाप कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि के वाक्यों को पान करने वाली दिव्या ने कहा, प्रभु आप को धन्य है। आपने मेरे बाल्यकाल का जीवन और मानो ज्ञान और विज्ञान मुझे स्मरण कराया है। देव ने कहा, हे देवी! तुम्हें यह प्रतीत है कि एक विज्ञानवेत्ता है, वह परमात्मा के विज्ञान में रत्त हो जाता है। और परमात्मा के विज्ञान में रत्त हो करके अन्वेषण करने लगता है। इस ब्रह्माण्ड की गणना करने लगता है। ब्रह्माण्ड के लोक-लोकान्तरों में चला जाता है। परन्तु वह अपने लिए ही व अपने में विज्ञानवेत्ता बन जाता है।

हे देवी! तुम्हें प्रतीत होना चाहिए। वेद का एक-एक मन्त्र हमें विज्ञान की आभा में परणित कर रहा है। वेद मन्त्र कहता है, **''प्रत्थम् ब्रह्माः प्रत्थम् दिव्याम् गतम् ब्रव्हे सम्भव प्रव्हा कृति लोकाः।''** हे देवी! ये जो संसार है, मानो देखो, लोक-लोकान्तरों में परणित हो रहा है। और लोक-लोकान्तरों का कोई सूत्र बना हुआ है। उस सूत्र के ऊपर हमें विचार-विनिमय करना चाहिए। तुम्हें ये प्रतीत है कि मैं एक समय, हे देवी! अपने ब्रह्मचारियों के सहित मानो देखो, शिकामकेतु उद्दालक के गृह में चला गया था। और उद्दालक के गृह में मानो देखो, आकाशगङ्गा के ऊपर गणना की जा रही थी। मानो वहाँ पृथ्वियों के ऊपर अन्वेषण हो रहा था। वहाँ

एक-दूसरे की माला के ऊपर मानो देखो, माला में माला को धारण कराया जा रहा था। मेरे प्यारे! देखो, मैत्रेय ने कहा, प्रभु वह कौन-सी माला थी जिन मालाओं को धारण करने में मानव एक-दूसरे में रत्त हो जाता है। तो बेटा! देखो, ऋषि ने कहा, हे देवी! वह माला मानो देखो, शिकामकेतु उद्दालक मुनि के यहाँ और वहीं मानो देखो, वृत्तिका मुनि विद्यमान थे। उन्होंने बेटा! वैशम्पायन इत्यादि सर्वत्र ऋषि-मुनियों का एक विचार-विनिमय होता रहा। तो उन्होंने कहा, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने ये कहा था कि ये जो माला है, इस माला को अपने में धारण करते चले जाओ। यदि तुम अपना कल्याण और अपने प्रभु के समीप जाना चाहते हो। मेरे प्यारे! उस विज्ञान में रत्त रहना चाहते हो।

माला का दिग्दर्शन

उन्होंने कहा प्रभु वह माला कौन-सी है? उन्होंने कहा कि वेद का ऋषि, बेटा! वेद मन्त्र उच्चारण करता हुआ कहता है **"प्रत्थम सूर्यस्वतम् ब्रव्हा क्रतम, व्रतम् देवत्वाम् ब्रह्मणेः कर्ताः।"** मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र, वेद के मन्त्र में, ग्रह में, एक-एक देव के ग्रह में बेटा! देखो, ब्रह्माण्ड की प्रतिभा निहित रहती है। जब वेद मन्त्र को विचारने लगते हैं तो बेटा! उसमें एक महानता की ज्योति जागरूक हो जाती है। वेद का ऋषि याज्ञवल्क्य कहता है, क्या शिकामकेतु उद्दालक ने मुझे वर्णन कराया, हम सब ब्रह्मचारियों को। और हमें मानो अपनी विज्ञानशाला में ले गए। जिस विज्ञानशाला में पृथ्वियों को जानने का प्रयास किया। उनको जब जान लिया गया तो मुनिवरों! देखो, उसकी माला बनायी गयी। वे माला बन गयी। उस माला को कौन धारण कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, सूर्य उनको धारण कर रहा है। "वेदाम् भूतम् ब्रह्माः सूर्याः" बेटा! सूर्य में वे माला पिरोयी गयी और अपने में उन्होंने धारण कर लिया। क्योंकि सूर्य इतना विशाल मण्डल है जिसमें बेटा! तीस लाख पृथ्वियों की माला बन करके, बेटा! सूर्य, अपने में धारण करता है।

मेरे पुत्रों! देखो, इसी प्रकार वेद के ऋषि ने कहा, हे देवी! जब शिकामकेतु उद्दालक से यह प्रार्थना की गयी कि महाराज, ये माला किस प्रकार की है। उन्होंने कहा, ये तीस लाख पृथ्वियों की माला को धारण करने वाला प्राण सूत्र को अपने में धारयामि बनाने वाला सूर्य कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि अपने में शान्त नहीं रहा करते हैं। वह तो अन्वेषण करते ही रहते हैं। मुनिवरों! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने जब और अनुसन्धान किया। तो मुनिवरों! देखो एक सहस्त्र सूर्यों को उन्होंने जानने का प्रयास किया। अपनी विज्ञानशाला में जाना एक सहस्त्र सूर्यों को। सूर्यों की माला बनी। उस माला के धारण करने वाला बृहस्पति कहलाता है। बृहस्पति इतना विशाल मण्डल है जिसमें बेटा! एक सहस्त्र सूर्य की माला बन करके उसको अपने में धारण कर रहा है। इतना विशाल मण्डल है बेटा! मैं तुम्हें विवेचना नहीं देने जा रहा हूँ। बेटा! इनका परिचय देने जा रहा हूँ कि वेद मन्त्र क्या कह रहा है। और वेद का ऋषि क्या उद्गीत गा रहा है इस सम्बन्ध में। मेरे पुत्रों! देखो, जब और माला बनी तो वैदिक ऋषियों ने बेटा! देखो, एक सहस्त्र बृहस्पतियों को जाना। उसकी माला बनी। उस माला को मुनिवरों! देखो, आरुणी अपने में धारण करने लगा। आरुणी इतना विशाल मण्डल है बेटा! जिसमें मुनिवरों! देखो, एक सहस्त्र बृहस्पति समाहित हो जाते हैं। और आरुणी मण्डल इतना विशाल मण्डल, मुनिवरों! देखो, उनको अपने में धारण कर रहा है। एक सहस्त्र आरुणी मण्डलों की माला बनी बेटा! उसको ध्रुव मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। ध्रुव मण्डल इतना विशाल मण्डल है जिसमें एक सहस्त्र आरुणी समाहित हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, एक सहस्त्र आरुणम् ब्रव्हे क्रतम् ध्रुवम् ब्रह्माः क्रदम् देवाः''। वेद के आचार्यों ने वर्णन करते हुए कहा क्या एक सहस्त्र ध्रुव मण्डलों की माला बनी। मेरे पुत्रों! उसको पुष्प नक्षत्र ने अपने में धारण कर लिया। एक सहस्त्र पुष्प नक्षत्रों की माला बनी उसको बेटा! देखो, स्वाति ने अपने में धारण कर लिया। एक सहस्त्र स्वाति मण्डलों की माला बनी उसको अचङ्ग मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। एक

सहस्त्र अचङ्ग मण्डलों की माला बनी बेटा! उसको मूल नक्षत्र ने अपने में धारण कर लिया। एक सहस्त्र मूल नक्षत्रों की माला बनीं जिसको मेरे प्यारे! मौनत्रितिका मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। एक सहस्त्र मौनत्रितिका मण्डलों की माला बनी बेटा! देखो, उसको अपने में, देखो गन्धर्व मण्डल ने अपने में धारण कर लिया।

मेरे पुत्रों! उस प्रभु का कितना विशाल मण्डल है। आज मैं बहुत मण्डलों में चला गया हूँ। विचार आता रहता है बेटा!, इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल बनता है। इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल बना। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि शान्त नहीं रह सकते थे। मेरे प्यारे! शिकामकेतु उद्दालक ने समाधिष्ठ हो करके और महर्षि वैशम्पायन ने और मुनिवरों! देखो तत्वेत्वर ऋषि महाराज ने अपने में अन्वेषण करना प्रारम्भ किया, समाधिष्ठ हो गए। और उन्होंने समाधि के द्वारा, मुनिवरों! देखो, क्रियात्मकता में भौतिक विज्ञान को जानने का प्रयास किया। मेरे प्यारे! देखो, उसमें शिकामकेतु उद्दालक ने, मुनिवरों! देखो अपने ब्रह्माण्ड वृत्तियों को जानने के लिए मुनिवरों! देखो, उन्होंने लगभग एक अरब छानवे करोड़ उनतीस लाख उनचासवें हजार पाँच सौ इकसठ (1,96,29,49,561) के लगभग बेटा! इतने सौर मण्डलों की एक, एक मुनिवरों! देखो आकाशगङ्गा बन गयी। मानो देखो, एक आकाशगङ्गा बन गयी। मानो देखो, एक आकाशगङ्गा का इतना विस्तार माना गया है। वैदिक आचार्यों ने बेटा! अपने में विज्ञानवेत्ता बन करके प्रभु के विज्ञान को जानने के लिए जब तत्पर होने लगे। तो बेटा! विज्ञान अपने में बड़ा अनूठा है। विज्ञान अपने में बड़ा सार्थक माना गया है। आओ मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने आगे जब विचार-विनिमय किया तो बेटा! देखो, एक अरब पचासी करोड़ नवासी लाख उनचासवें हजार पाँच सौ बावन (1,85,89,49,552) के लगभग बेटा! ऐसी-ऐसी आकाशगङ्गाएँ की बेटा! देखो, एक अवन्तिका बन जाती है। मेरे प्यारे! देखो, एक अवन्तिका बन गयी। और मुनिवरों! पौने दो अरब अवन्तिकाओं की बेटा! एक निहारिका बन गयी। मेरे पुत्रों! देखो, प्रभु का ब्रह्माण्ड तो बड़ा अनन्तमयी

है। ऋषि आगे नेति-नेति कह करके मौन हो गया। और वेद के ऋषि ने कहा है क्या, ''ब्रह्मणेः क्रतम् देवत्वाम् लोकाः'' मानो देखो, एक-दूसरे में माला पिरोयी जाती है। मालाओं का निर्माण होता है। और उन मालाओं को मुनिवरों! देखो, परमपिता परमात्मा का जो अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है, उद्गीत गाने वाला है। मेरे प्यारे! एक-दूसरे में ओत-प्रोत हो रहा है। एक-दूसरे में पिरोया जा रहा है। तो विचार आता रहता है। मेरे पुत्रों! देखो, प्रभु का विज्ञान कितना अनन्तमयी है।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की जिज्ञासा

हे देवी! मेरे पुत्रों! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, हे देवी! हमने शिकामकेतु उद्दालक से जिज्ञासा प्रगट की। उन्होंने कहा, हे ऋषिवर! ये आपने कैसे जाना है इतने ब्रह्माण्ड को। तो उन्होंने कहा, मैं अपनी विज्ञानशाला में याग करता रहता हूँ। यज्ञशालाएँ हैं, और विज्ञानशालाएँ हैं, उनमें अन्वेषण करता रहता हूँ। शब्द के ऊपर अनुसन्धान करता रहता हूँ। अग्नि की धाराओं के ऊपर शब्द विद्यमान हो करके ये मानो देखो, ब्रह्माण्ड और द्यौ में ओत-प्रोत हो जाता है। हे देवत्याः, मानो देखो, इस प्रकार का विज्ञान, मैंने याग के माध्यम से जानने का प्रयास किया है। मेरी जो पत्नी है, दिव्या है, रम्भेश्वरी, मानो हम दोनों अन्वेषण करते रहते हैं। अपने पूर्वजों का दर्शन करते रहते हैं। मानो देखो, ये विज्ञान अपने में हमने जानने का प्रयास किया। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले, हे देवी! महर्षि ने जब मुझे ये वर्णन कराया तो मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हो गया। और मैंने ये विचारा कि इसमें तो तप की आवश्यकता है। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषियों ने वायु का सेवन करते-करते इस विद्या को जानने का प्रयास किया व विज्ञानवेत्ता बनने के लिए सदैव तत्पर रहे। परन्तु विज्ञान अपने में महान् है, विचित्रत्व है। परन्तु विज्ञान में देखो दुरुपयोगिता नहीं होनी चाहिए।

मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब अपनी पत्नी मैत्रेय से यह कहा कि हे देवी! जो भी कुछ मानव विज्ञानवेत्ता बनता है,

निहारिकावेत्ता बनता है, वह आकाशगङ्गाओं को जानता है। नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों में रमण करता हुआ अपने लिए ही कर रहा है। मानो देखो, अपने राष्ट्र के लिए, अपने समाज के लिए, अपने समूह के विज्ञान को जानने के लिए तो वो सदैव तत्पर रहता है। हे देवी!, यदि ये विद्याएँ तुम्हारे समीप आ जाएँ। मानो ये सङ्कीर्णता को त्यागना तुम्हारा धर्म है। मानो देखो, तुम व्यष्टि और समष्टि में प्रवेश हो जाओ। **व्यष्टि को त्यागते रहें और समष्टि में प्रवेश हो जाओ।**

देवी ने कहा, प्रभु! आपको धन्य है। आप भगवन् तप करने जाइए, भगवन्! तो मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा हे मैत्रेय! तुम सन्तुष्ट हो। मेरे इस ज्ञान के उच्चारण करने से तुम्हारा हृदय सन्तुष्ट हो गया है। उन्होंने कहा, हे भगवन्! हम सब सन्तुष्ट हैं। आप तप करने जा रहे हैं ये हमारा बड़ा सौभाग्य है। हे मेरे देव! आप तप करने के लिए जाइए।

मेरे प्यारे! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इस मधु विद्या को प्रदान करते हुए, क्या मानव अपने में ही अपनेपन का दर्शन करता रहे। अपने, अपने में ही विज्ञान का दर्शन करता रहे। अपने में अपने विज्ञान को बाह्य जगत के विज्ञान का, दोनों का समन्वय करता रहे तो मानो देखो, ये अपनापन कहलाता है। इसे मधु विद्या कहते हैं। ये मधुमय मानी गयी है।

महर्षि का पुनः से तप के लिए भयङ्कर वन में गमन

मेरे पुत्रों! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने दोनों देवियों को सन्तुष्ट करने के पश्चात् वह भयङ्कर वन में चले गए। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि जब भयङ्कर वन में चले गए तो वहाँ विचारने लगे। वेद मन्त्र उन्हें स्मरण आने लगा। और वेद मन्त्र उन्हें स्मरण आने लगे। और वेद मन्त्र यह कह रहा था **"तपम् हिरण्यम् तपम् दिव्याम् तपम् देवत्वाम् ब्रह्मणेः तपाः"** तो वेद का ऋषि यह विचारने लगा कि वेद मन्त्रों में तप की महिमा तो आयी है।

परन्तु तप किसे कहते हैं। ये तप है क्या। मेरे पुत्रों! देखो ऋषि विचारने लगा। वेद मन्त्र को पुनः विचारने लगा **"अन्नम् भूतम् ब्रह्मणे मनाः, अन्नम् दिव्याम् प्राणम् ब्रव्हे विचारास्सुतम् देवत्वाम्।"** मेरे प्यारे! देखो, जब इस प्रकार के वेद मन्त्रों का ऋषि उद्गीत गाने लगा। उसने कहा कि वेद मन्त्र तो यह कहता है, क्या ये जो मन है, ये तो अन्न से पवित्र बनता है। **और मन जब पवित्र होता है तो विचार आते हैं। विचार आते हैं तो प्राण की धाराएँ पवित्र होती हैं और उसी से हम ज्ञान और विज्ञान में सार्थक बन जाते हैं।** मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार अपने में अन्वेषण किया। अपने में अनुसन्धान किया। तो मुझे बेटा! स्मरण आता रहता है क्या ऋषि, बेटा! देखो, उस अन्न को एकत्रित करना ऋषि ने प्रारम्भ किया जिसको शिलस्त अन्न कहा जाता है। उस अन्न को एकत्रित किया। उस अन्न को पान करते थे। वायु का सेवन करते थे। और मुनिवरों! देखो, मन कैसे पवित्र बनता है, अन्न के द्वारा। अन्न जब पवित्र बन जाता है तो मन पवित्रता को प्राप्त हो जाता है। ये देव प्रवृत्ति को प्राप्त होने लगता है। इन्द्रियों के ऊपर सँयम हो जाता है। इन्द्री बेटा! देखो, पाँच ज्ञानेन्द्रि, पाँच कामेन्द्रियाँ और दस प्राण कहलाते हैं। और मुनिवरों! देखो ये मन, बुद्धि, चित्त अंहकार, ये चतुषश्चः **अन्तःकरण** कहलाता है।

शतपथ ब्राह्मण का निर्माण

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि इसके ऊपर विचार-विनिमय करने लगे। तो मुझे ऐसा स्मरण आ रहा है पुत्रों! क्या ऋषि ने बेटा! बारह वर्ष तक उस शिलस्त अन्न को पान किया। और जब पान करते थे तो बेटा! उसके पश्चात् उन्होंने एक लेखनीबद्ध, एक लेखनी प्रारम्भ की। और उस लेखनी में मुनिवरों! देखो उन्होंने शतपथ ब्राह्मण का निर्माण किया। **जो सत् का पथिक होता है वही तो ब्राह्मण कहलाता है।** मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने ये लोलुप्ति दी। वेद का आचार्य कहता है **"ब्रह्मचरिष्यामि गतम् ब्रह्माः**

ब्रह्मणम् लोकम् ब्रह्मे व्रतम्।'' मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने तीन शब्द प्रारम्भ में उच्चारण किए। जो वेद के प्रथम रूपों में रत्त होते रहते हैं। उन्होंने कहा, अग्नि क्या है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा, अग्नि वह है जिसमें दुरिता न रहे। उन विचारों का नाम देखो अग्नि तुल्य माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा, **ब्रह्मवर्चोसि** किसे कहते हैं। ब्रह्मवर्चोसि उसे कहते हैं जो मानो देखो चरि, दो ही शब्द हैं संसार में–चरि और ब्रह्म। ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को और चरि कहते हैं प्रकृति को। जो चरि को अङ्ग और उपाङ्गों से जानता है और ब्रह्म उसमें ओत-प्रोत है, जो उसे जानता है बेटा! वो ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, जब ब्रह्मचारी विद्यालय में प्रवेश करता है तो आचार्य कहते हैं, चक्षु में शुन्धामि, प्राणम् में शुन्धामि, श्रोत्रम् में शुन्धामि। मेरे प्यारे! वो आचार्य कहता है, ब्रह्मचारी तू मुझे इन्द्रियों को प्रदान कर। मैं तेरे इन्द्रियों के दोष को अपने में धारण करना चाहता हूँ। आचार्य के जो विचारणीय उद्गार हैं वही तो बह्मचारी के हृदय में बेटा! प्रविष्ट हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार का उद्गीत अमृतम् देखो वह ब्रह्मचरिष्यामि कहलाया गया है। उन्होंने कहा, **ब्राह्मण** कौन है। वेद के ऋषि ने कहा है ''ब्रह्मणम् ब्रह्मेः क्रतम् देवत्वाम् देवा ब्रहा कृति लोकाम्''। ब्राह्मण वह कहलाता है जो कण-कण में ब्रह्म को दृष्टिपात करने वाला है। एक-एक कण-कण में ब्रह्म का दर्शन करता है। अपने को ब्रह्म में और ब्रह्म को जो अपने में पिरो देता है, मेरे पुत्रों! देखो, वह ब्राह्मण कहलाया जाता है। वेद के ऋषि ने प्रश्न किया, क्या ब्राह्मण कौन है। जो कण-कण में मानो देखो, ब्रह्म की आभा को दृष्टिपात करता है और ब्रह्म की आभा में ही ये संसार विज्ञान के रूप में रत्त रहता है, वह ब्राह्मण कहलाता है। परन्तु वेद का ऋषि पुनः प्रश्न करता है, क्या ब्राह्मण कौन है। उन्होंने कहा, ब्राह्मण वह है जो, जो अपने में ब्रह्म को समाहित कर देता है और अपने को ब्रह्म में समाहित कर लेता है। एक-दूसरे के जब पूरक बन जाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, वह प्रत्येक प्राणी मात्र में; अपने में ही अपनेपन का दर्शन करता है। बेटा! वो ब्राह्मण कहलाता है।

आओ मेरे प्यारे! वेद का ऋषि अपनी विवेचना देते हुए, कितनी महानता की वार्त्ता प्रकट कर रहा है। वह कहता है ब्रह्मचरिष्यामि, ब्रह्मचारी कौन है। अरे! **ब्रह्मचारी** किसे कहते हैं। उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी वह कहलाता है जो ब्रह्म की चरि को चरने वाला है। मानो ब्रह्म की चरि क्या है। बेटा! जितना भी ये ब्रह्माण्ड है और उसमें जो ब्रह्म की चरि अग्निमयी स्वरूप में रमण कर रही है। आपोमयी स्वरूप में रमण कर रही है। गुरुत्व रूप में रमण कर रही है। मेरे पुत्रों! जो तेजोमयी बनी हुई है। उसे जो बेटा! वो अङ्गों-उपाङ्गों से जानता है, वह ब्रह्मचारी कहलाता है।

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि कहता है क्या ब्रह्मचारी कौन है। उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी वह है जो अपने को मानो देखो, ब्रह्म में पिरो देता है। वह अपने को मनका बना देता है और मनका किसी सूत्र में पिरो देता है, वो ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे पुत्रों! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की बुद्धि बड़ी प्रखर और महानता में थी। उन्होंने स्वयँ प्रश्न किया कि ब्रह्मचारी कौन है। वह कहता है कि एक-एक श्वास जो गतिवान् हो रहा है। एक-एक श्वास का जब वो मनका बना देता है और मनका बना करके जब वो ब्रह्म सूत्र में पिरो देता है, मेरे पुत्रों! वह ब्रह्मचारी कहलाता है।

आओ मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मवर्चस्सुतम्, मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी कौन है। उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी लौकिकता में उसे कहते हैं जो प्रजा का निर्माण करता है। प्रजामयी बना देता है वो समाज को प्रजामयी। मानो देखो, ब्रह्मवर्चोसी का पालन करता रहता है। आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष तुम्हें विवेचना देना नहीं चाहता हूँ। विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो विचार ये कि हम परमपिता परमात्मा की महती और उसकी महानता के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते रहें।

वेद के ऋषि ने जब शतपथ ब्राह्मण की विवेचना करने लगे, लेखनीबद्ध करने लगे तो उन्होंने तीन शब्दों को लिया। वह **तीन शब्द**, ब्राह्मण क्या है, ब्रह्मचारी क्या है और ब्रह्म की चरि को कौन चरता है। तो

मेरे प्यारे! देखो, ये तीन शब्दों की विवेचना करने वाला ये सर्वस्व शतपथ ब्राह्मण कहलाता है। तो आओ मेरे प्यारे! देखो, विचार-विनिमय क्या। आज का हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करते हुए और देखो ब्रह्म, ब्राह्मण ब्रहे ब्रह्मचरिष्यामि, हम सर्वत्रता को जान करके बेटा! उन्होंने एक तपश्चर, बारह वर्ष का तप किया। और वे शिलस्त अन्न को पान करते थे। वायु का सेवन करते थे। मेरे पुत्रों! देखो, वह तपस्या कही जाती है। हमारे यहाँ पर उसे तप कहते हैं, तप कहते हैं इन्द्रियों के विषयों को जानना, और जान करके मुनिवरों! देखो उनकी चर्म सीमा पर पहुँच जाना। और उनको समेट लेना और समेट करके मुनिवरों! देखो मन को समर्पित कर देना और मन को समर्पित करके प्राण में प्रतिष्ठित हो जाना। मेरे पुत्रों! उसके पश्चात् जो भी महापुरुष अपनी लेखनियाँबद्ध करने लगेगा, बेटा! वह परमपिता परमात्मा की वैदिक वाणी में से देखो अपनी वाणी को सन्तुलित कर लेता है। तो विचार-विनिमय बेटा! उच्चारण करने का हमारा क्या है। हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएँ। आओ मेरे प्यारे! देखो, हमारा जीवन तपोमय होना चाहिए। तप की मीमांसा करने वाले याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने, बेटा! बारह वर्ष का तप करने के पश्चात् वह शतपथ ना ब्रह्मे, शतपथ नाम की पोथी का निर्माण करते हुए वह वहाँ से बेटा! भयङ्कर वनों से गमन करते हैं।

महर्षि का तप के उपरान्त पुनः से विद्यालय में आगमन

बारह वर्ष के पश्चात् मेरे पुत्रों! देखो, अपने विद्यालय में पहुँचे। विद्यालय में प्रसन्नता का वातावरण छा गया। ब्रह्मचारियों ने चरणों की वन्दना की। और उन्होंने कहा, कहो भगवन्! आपने क्या तप किया है। उन्होंने कहा, ब्रह्मचारियों ये पोथी का मैंने तुम्हारे लिए निर्माण किया है। इसके ऊपर तुम अपना आचरण करो। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी कहते हैं धन्य है प्रभु! आपने हमाने अज्ञान को दूरी कर दिया है। हमारे जीवन को

प्रकाश में पहुँचाया है। हम प्रकाश को चाहते हैं। क्योंकि **प्रकाश का नाम जीवन है।** और अज्ञान का नाम मृत्यु है। अन्धकार से आपने हमें प्रकाश में पहुँचाया है। बेटा! देखो, ''तपम् ब्रह्मणे क्रतम्'' वेद के आचार्य ने कहा कि **संसार में तप ही जीवन है।** ये संसार एक-दूसरे में तप रहा है। मानो सूर्य तपता है तो चन्द्रमा को तपायमान करता है। चन्द्रमा अमृत देता है और सूर्य ऊर्ज्जा देता है। मानो देखो, अग्नि अपने में उष्ण बनी रहती है तो यह तपोमय कहलाती है। आपोमयी तप रहा है, यह मानो प्राण सत्ता प्रदान कर रहा है। ये पृथ्वी तप रही है नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म देती है। संसार में मेरी प्यारी माता जब तपस्वी बन जाती है तो ये मानो देखो, अपने गर्भ के आत्मा से वार्त्ता प्रगट करके, प्राण को अपान में समेट करके मानो देखो, उससे ''अमृताम् भूतम् ब्रह्मणे।'' मेरे प्यारे! वह तपो से देवता को, प्रजा को जन्म दे देती है। तो विचार आता रहता है।

आज के हमारे **वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः** ये है कि हम परमपिता परमात्मा की महती का सदैव गुणगान गाते रहें। परमात्मा का ये जो अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है वह प्रभु कैसा अनन्तवान् है। ऐसा ही उसका अनन्तमयी जगत की रचना उसने की है। इस ब्रह्माण्ड को बेटा! ऋषि-मुनि परम्परागतों से बेटा! मापते चले आए हैं। निर्माणित करते चले आए है। ये है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

''ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मनुः वाचन्न गताः''
''ओ३म् तनु गायाः वसुः वाचाहम् ब्रह्मणाः''
''ओ३म् देवम् रथ् सञ्जनाः आभ्याम् लोकाः''
''ओ३म् यश्शचाहम् भूः आभ्याम् रथश्स्वाहम् मनुः आपाः''
''ओ३म् भद्राणि वसु मन्थाः आपा देवम् अग्नम् ब्रह्मणाः वायाः''

दिनाँक : 5 फरवरी, 1990
स्थान : जोधपुर (राजस्थान)

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. राष्ट्र कहते हैं जहाँ महान् पुरुषों का आदर किया जाता है और दुराचारियों को दण्ड दिया जाता है।
2. धर्म उसे कहते हैं जो यथार्थ को यथार्थ उच्चारण करता है।
3. गौ नाम का पशु है जो हमें वह पदार्थ देता है जिससे बल और वीर्य की वृद्धि होती है।
4. यदि मानव समाज को ऊँचा बनाना है तो मेरी प्यारी माताओं को ऊँचा बनना है अपनी लज्जा को ऊँचा बनाना है।
5. रावण नाम बुद्धिमान का है, रावण नाम महादानी का है।
6. राष्ट्र का नियम बनता है उच्चता से और दृढ़ता से।
7. राजा का चुनाव किया जाए तो बुद्धिमानों को करना चाहिए।
8. राजा का राष्ट्र उस काल में पवित्र होता है जब राजा के राष्ट्र में किसी भी प्राणी का हनन नहीं होता है।
9. हम स्वतन्त्र उस काल में होते हैं जब मन, वचन, कर्म से किसी प्रकार का पाप करने के लिए तत्पर नहीं होते।
10. राजा से ऊँचा समाज होता है ब्राह्मण समाज।
11. राम राज्य जब आता है तो बुद्धिमान समाज से आता है।
12. जो मानव जिसकी रक्षा करता है, वह प्राणी उसकी रक्षा करता है।
13. वेदों में राष्ट्र का विधान धर्म की रक्षा करने के लिए राष्ट्र का निर्माण किया जाता है।
14. जो पूर्व जन्मों के संस्कार होते हैं उन सबका सम्बन्ध वायु से हमारे अन्तःकरण से और स्मृतियों से होता है।
15. इन्द्रियों पर शासन करने वाला मन है, मन को शासन में करने वाली बुद्धि है, बुद्धि को शासन में करने वाली आन्तरिक भावनाएँ हैं।
16. परमात्मा ने सबसे पूर्व प्रकाश को रचा उसके पश्चात् रात्रि को रचा।
17. वेद सब कुछ कहता है, हम वेद को अपने जीवन में धारण करते चले जाएँ यही हमारा कर्त्तव्य है।

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

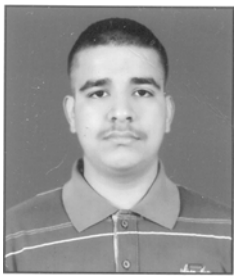

वैदिक कुमार त्यागी

श्रीमति पूनम त्यागी व श्री संजीव त्यागी जी निवास स्थान बल्लभगढ़, हरियाणा (मूल निवासी ग्राम दिनकरपुर, जिला मुजफ्फरनगर) ने अपने सुपुत्र चिरन्जीव वैदिक कुमार त्यागी के शुभ जन्मदिवस 8 मई 2020 के आगमन पर 5101 रु. का सात्त्विक सहयोग प्रतिवर्ष की भाँति उदारता से प्रदान किया है। जिससे कि ऋषि मुनियों के क्रियाकलाप को ऊर्ध्वा गति प्रदान करते हुए प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में उनके आशीर्वाद की छत्र-छाया भी निरन्तर स्मरण रूप में बनी रहे। उसी धारा को निरन्तर जागृत रखते हुए अपने सेवाकाल को भी बड़ी निष्ठा व कर्मठता से करते हुए लाक्षागृह बरनावा में रक्षा बन्धन की पावन वेला पर आयोजित यज्ञ में प्रति वर्ष पति-पत्नि अपने सुपुत्र सहित यजमान बनकर अपने जीवन में साहित्य का निरन्तर अध्ययन करते हुए अपने को परिवार सहित ऊर्ध्वा गति प्रदान करने में संलग्न हैं।

प्रिय वैदिक अपने माता-पिता की छत्रछाया में लगभग पिछले पन्द्रह वर्षों से साप्ताहिक यज्ञ केवल गऊ घृत से सम्पन्न करते हुए प्रतिदिन प्रातःकाल में पूज्यपाद-गुरुदेव के मन्त्र पाठ व मधु शान्ति पाठ के श्रवण करने में सन्लग्न हैं। आपने इस वर्ष कैमिकल इन्जीनियरिंग की शिक्षा को बड़ी विद्युता से सम्पन्न कर लिया है।

समिति त्यागी जी के सौभाग्यशाली पुत्र प्रिय वैदिक कुमार को जन्मदिवस की शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए उज्ज्वल भविष्य के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है और समस्त परिवार का पुनः से आभार प्रकट करते हुए सुख, शान्ति, दीर्घायु व सर्वतोन्मुखी उन्नति के लिए भी ईश्वर से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

रक्षित भारद्वाज

श्रीमति इन्दु भारद्वाज व श्री विपिन भारद्वाज निवासी ग्राम रई, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश ने अपने प्रिय सुपुत्र रक्षित भारद्वाज के बाइसवें जन्मदिवस, दिनाँक 7 जून, 2020 के शुभ आगमन पर प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 5100 रु. का सात्त्विक सहयोग समिति के प्रकाशन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए उदारता से प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार व्यक्त करती है।

श्री भारद्वाज जी गुड़गाँव में सेवारत हैं और वहीं पर अपने परिवार सहित अपने जीवन को अपने कार्य के साथ-साथ वैदिक परम्परा से सम्पन्न करने में प्रयत्नशील हैं। समस्त परिवार पूज्यपाद गुरुदेव से विशेष प्रभावित है और उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए यागों में अपनी आहुति प्रदान करके अपने जीवन को निरन्तर यज्ञमयी बनाने में सदैव अग्रणीय रहता है।

ऐसे श्रद्धालु एवम् याज्ञिक परिवार के सहयोग का समिति पुनः से आभार प्रकट करती है और उनके सौभाग्यशाली पुत्र के जन्मदिवस पर बारम्बार शुभकामनाएँ देते हुए समस्त परिवार के लिए सुख, शान्ति, दीर्घायु व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

यौगिक प्रवचन के स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (नियम नं. 8)

1.	प्रकाशन स्थान	: दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	: भारतीय
	मुद्रक का पता	: डी-33, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
4.	प्रकाशक	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	: भारतीय
	प्रकाशक का पता	: डी-33, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
5.	सम्पादक का नाम	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	: भारतीय
	सम्पादक का पता	: डी-33, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	: वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

मैं डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
प्रकाशक के हस्ताक्षर

वैदिक अनुसंधान समिति (पञ्जी.)
सी-38, शिवालिक, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017

सदस्यता

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गङ्गा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 1500 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 150 रु. होगा, जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   डी-33, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

नम्र-निवेदन

समिति के बैंक के खाते में दान की राशि हस्तान्तरण करने से दानदाताओं का नाम, पता व उद्देश्य इत्यादि की जानकारी बैंक से प्राप्त नहीं हो पाती है इसलिए सभी दानदाताओं से नम्र-निवेदन है कि राशि बैंक के खाते में हस्तान्तरण करने के साथ-साथ समिति की वेबसाइट पर या निम्न किसी भी एक पते पर दान राशि का अन्य विवरण सहित सूचना देने का कष्ट करें–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   डी-33, पँचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर ऊर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस अन्तरात्मा को जानने का प्रयास करें। हम आत्मवेत्ता बन करके अपनी मानवीय धारा में ऊँचा बन जाएँ। यह न सूर्य है, न चन्द्रमा है, न तारामण्डल है, न अग्नि है, न शब्द है। भगवन्! प्रकाश के देने वाला आत्मा है। आत्मा के कारण ही मानव का शरीर क्रियाशील बना रहता है। तो इसीलिए प्रत्येक मानव को आत्मा को जानना चाहिए। आत्मवेत्ता बनने के लिए, आत्मचेतना में ही रत्त रहना चाहिए। क्योंकि जो हमारे शरीरों में भास रहा है, प्रकाशक बना हुआ है, उस प्रकाश को जानने के प्रकाश से प्रकाशित होना चाहिए। यह कैसा अद्‌भुत जगत है, इसके ऊपर विचारना है, बहुत गम्भीरता से मनन करना है। क्योंकि मनन करने वाला यह ब्रह्माण्ड है, प्रभु की जो रचना है वह बड़ी अद्‌भुत है। इसीलिए प्रभु का गुणगान गाना हमारे लिए अनिवार्य है।

पूज्यपाद-गुरुदेव